...योगानंद के लिए ...

हरेक मनुष्य चाहता तो है कि योग द्वारा वह भी अपने जीवन में परम शांति एवं आनंद की अनुभूति करे। परंतु जब योगाभ्यास में उसका मन एकाग्र नहीं हो पाता तो वह निराश होकर योगाभ्यास को छोड़ देता है। निस्संदेह एकाग्रता योगाभ्यास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, परंतु यदि हमारी मानसिक भूमि में उनका समावेश हो तो मन का एकाग्र होना कठिन नहीं होता। आज हम इसी विषय को लेकर उसपर विस्तृत चर्चा करना चाहेंगे।

कहाँ होता लोगों का मन आकर्षित

सभी जानते हैं कि संसार में कोई भी अद्भुत व्यक्ति, विचित्र वस्तु या अनोखा वृत्तान्त हो तो उसकी ओर मनुष्य का मन स्वत: आकर्षित होता है और उसे देखने में उसका मन ऐसा लग जाता है कि उसे दूसरी बात की सुध-बुध ही नहीं रहती। कोई ठिगना मनुष्य हो, कोई लम्बे कद का व्यक्ति हो, कोई बहुत ऊँचा भवन हो, ऐसी चीज़ें देखकर हम स्वत: आकर्षित होते हैं, और ये सारी चीज़ें हमारे मन पर एक चिरस्मर्णीय छाप छोड़ जाती हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

अत: यदि हम इस बात को समझें कि परमात्मा भी अद्भुत है, विचित्र है, महान् से भी महान् है और उसके कर्त्तव्य एक अर्थ में सर्वाधिक चमत्कारी भी हैं तो हमें उसकी स्मृति भी बारंबार अपनी ओर आकर्षित करेगी और हम ध्यानस्थ अर्थात् एकाग्र एवं तल्लीन हो सकेंगे। परमाणु से भी सूक्ष्म ज्योति-बिन्दु रूप परमात्मा में सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान हो सकता है, वो ऐसे कि जब कोई एक व्यक्ति या एक कलाकार किसी चावल के दाने पर या गेहूँ के दाने पर गीता के इतने सारे श्लोक लिख सकता है, लोग उसे अद्भुत और चमत्कारिक मानते हैं, तो क्या तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा में नहीं हो सकता!

'कोई जादूगर' आम की गुठली से दस मिनट में आम पैदा कर ले तो भी सभी उसके चमत्कार की ओर ही दत्त-चित्त रहते हैं परन्तु परमात्मा तो ईश्वरीय ज्ञान एवं योग से आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों को देवता बना देते हैं! हमारा भाव यह है कि यदि इस प्रकार हम परमात्मा के अद्भुत वैचित्र्य तथा 'चमत्कारों' पर ध्यान दें अथवा उनका मनन-चिंतन करें तो कोई कारण नहीं है कि हमारा मन उनकी स्मृति में लवलीन नहीं होगा।

कैसे करें चिन्तन?

सभी जानते हैं कि मनुष्य के सामने जब कोई समस्या हो तो उसका मन स्वत: ही उस ओर खिंच जाता है। समस्या जितनी विकट हो अथवा परिस्थिति जितनी दु:साध्य हो उतना ही उसका चित्त उधर लग जाता है। साधारण भाषा में इसे ही 'चिंता' कहा जाता है। चिंता लगाई नहीं जाती, वह तो लग जाती है। स्थिति को गम्भीर समझने से स्वत: ही मन उधर ही का चिंतन करता है। इस प्रकार का दु:खद चिंतन 'चिंता' कहलाता है। मान लीजिये कि किसी व्यक्ति को काफी बड़ा ऋण चुकाना है। उसके लिये अवधि भी निश्चित है। अत: उसे चिंता लग जाती है और उसके लिये वह पुरुषार्थ करता है।

इसके लिए हमें स्वयं तथा परमात्मा को प्रेम करना होगा

मनुष्य को जिससे प्रेम हो जाता है, उसका ही वह हो जाता है। उसे स्वप्न भी उसी के आते हैं। प्रेम की लगी बुझती नहीं। जिससे मनुष्य को घृणा हो जाये उसका ध्यान भी उसका मन स्वत: ही करता रहता है। जिससे मनुष्य का ऐसा प्यार हो जाये कि उसके बिना वह रह ही न सके, उसे ही 'राग' कहते हैं। अत: यदि मनुष्य को अपने तमोगुणी संस्कारों से घृणा हो जाये तो उससे छुड़ाने वाले प्रभु की प्रीति उसके चित्त को प्रभु-स्मृति में अवश्य ही समाहित कर देगी। इस कलयुगी, आसुरी सम्पदा वाली मायावी सृष्टि से वैराग्य होगा तो प्रभु से अनुराग हो ही जाएगा और ऐसा होने पर मनुष्य अवश्य ही प्रभु के राग अलापेगा। प्रभु से प्रीति तथा इस मृत-प्राय: संसार से वैराग्य, उपरामता वृत्ति तभी बनेगी जब मनुष्य के मन में यह ज्ञान बैठेगा कि इस संसार की क्या दुर्गति हुई है और अब सद्गति करने वाला प्रभु कितना करुणामय, कल्याणप्रद, वरद तथा सलोना है। तब वह प्रभु पर न्योछावर हुए बिना नहीं रह सकेगा। उसका यह समर्पण भाव, उसकी यह अनन्य प्रीति, यह मानसिक लगाव उसे ऐसा एकाग्र कर देगा कि वह उस रस में ही डूब जायेगा।

बाबा को याद करना हो तो ड्रामा की नॉलेज पक्की हो

बाबा कहता है साक्षी होके देखो तो सब कुछ ठीक है। साक्षी होके देखने का अभ्यास चाहिए। एक सेकेण्ड में साक्षी बनो तो फील होता है बाबा साथी है। ड्रामा का ज्ञान कैसे बाबा ने शुरु किया, वन्डरफुल। हम लोगों को अपना परिचय दिया, तुम आत्मा हो, यह दृष्टि से परिचय दिया, नहीं तो आत्मा समझना सहज नहीं है। सभी कुछ करके अपने आप छिपा दिया। तो अवस्था ऐसी हो जो देखते या सम्पर्क में आते बाबा याद आये। हरेक अपने आपको साक्षी होकर के देखो बाबा साथी है तो हमारे संग से औरों को बल मिलता है। एक सोते हुए को जगाना सहज नहीं है। चलते-चलते माया अपनी लोरी देके नींद करा देती है। माया मासी है, वह छोड़ती नहीं है। बाबा का घर सो अपने दाता का घर है, तो कभी किसी से कुछ मांगना नहीं पड़ता है। बाबा कैसे हरेक को प्यार करता है, बाबा का प्यार हमको प्रेम-स्वरूप बनाता है। ज्ञान-स्वरूप, प्रेम-स्वरूप, आनंद-स्वरूप। क्योंकि ज्ञान स्वरूप में लाना है, जो बाबा का प्यार है, प्रेम हमारे स्वरूप में है, सदा ही प्रेम-स्वरूप हो क्योंकि जब बाबा के प्यार का अनुभव होता है तो वो प्रेम-स्वरूप में आ जाता है।

ज्ञान सत्य है, सच्चाई प्रेम-स्वरूप बनाती है। बाबा रूह को प्यार कर रहा है, पर कोई जिस्म को प्यार कर रहा है तो बाबा उस समय साक्षी हो जाता है। जिस्मानी प्यार धोखा देना वाला है, रुहानी प्यार धोखे से बचाने वाला है। कोई आत्मायें होती हैं, कभी कोई कैसी भी परिस्थिति हो पर वह उसे पार कर देंगे, यह है बाबा से रुहानी प्यार की शक्ति खींचने का प्रैक्टिकल प्रमाण। बात पार हो जायेगी, पास हो जायेंगे। बात रहने वाली नहीं है, वो तो चली गयी, परंतु जो चली गयी मैं उसे सोचती रहूं, तो उस बात के परवश हो जायेंगे। वह बात भूत बना देती है। जैसे भूत प्रवेश हो जाता है, ऐसे बात प्रवेश हो गई फिर वह चिंतन छूटता नहीं है।

जैसे ब्रह्माबाबा में शिवबाबा की प्रवेशता है, मेरे में किसकी है? किसी चीज़ को भी मेरा कहा तो भूत आया। तेरा कहा तो भूत भाग गया। बाबा की बातें भूतों को भगाने वाली हैं इसलिए बाबा की अच्छी याद रहे। बाबा को याद करो क्योंकि बाबा की बातों में ताकत है।

मैं हर एक बात कम्पलीट रूप में देखना चाहती हूँ, कोई कमी न हो। एक दो की विशेषता को देखो, सब एक जैसे नहीं होंगे, हरेक का पार्ट अपना है। ऐसे नहीं कहो कि इनको प्यार मिलता है, मेरे को नहीं मिलता है या इनसे तो यह अच्छी है। देखते हैं इनसे यह अच्छी है, तो कहाँ है ड्रामा की नॉलेज? जिसमें ड्रामा की नॉलेज नहीं है तो नॉलेज देने वाले की याद कैसे रहेगी? बाबा को याद करना हो तो ड्रामा की नॉलेज पक्की हो। जिसने जितना बाबा के साथ अपना सम्बन्ध बनाके रखा है, उतना उसने अपना यादगार बनाके रखा है। हरेक का पार्ट अपना है, पर मैं कम नहीं हूँ। बाबा भी कहे बच्ची काम की है, जो मैं कहता हूँ ना, उस डायरेक्शन पर चलती है। सेवा मस्ताना बना देती है, कोई कहेंगे पागल हुआ है, हाँ पागल हैं, किसके पीछे पागल हैं?

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कौन क्या कहेंगे उसकी कोई परवाह नहीं, तो यह है मस्त फकीर। पर अभी स्थिति भी ऐसी हो जो अन्त मते निमित्त मात्र शरीर में बैठे हैं, बाबा ने बिठाया है, बाकी मेरा कुछ है ही नहीं। सब है तेरा, तू है मेरा। तो मेरी भावना है अन्त मते सबकी ऐसी हो। शरीर तो हरेक को छोड़ना है आज नहीं तो कल, पर कैसे छोड़ना है! मैं नहीं समझती हूँ, मेरे जैसा किसको फिकर है, है किसी को ऐसा फिकर? फखुर भी है, फिकर भी है। कल्प पहले भी ऐसी थी, अभी भी बनना ही है ना, मुझे यह फखुर है इसमें ब्रह्मा बाबा को कॉपी करना राइट है। बाबा देह में है, पर देह से न्यारा कैसे है? अच्छी तरह से आँखें खोलके, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी बनके बाबा को देखो, तो कोई न कोई जो मोह माया अंदर सूक्ष्म पकड़के बैठी है, कहाँ न कहाँ अब इससे छुड़ाओ अपने को। परिवर्तन करना है, तो सी फादर, फॉलो फादर का रट लगाओ, इसलिए कुछ और दिखाई नहीं पड़ता है। बाबा कैसे देखता है सबको? कॉपी करो सिर्फ बैठा है, हाथ भी ऐसे नहीं करता है दृष्टि दे रहा है।

बाबा की दृष्टि बनाती 'माँ' से 'देवी माँ'

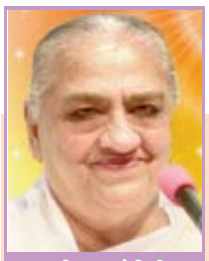

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सभी कौन-सी आत्मायें बैठी हैं? खुशनसीब। हमारा नसीब कितना खुश है, जो बाबा हमें निमंत्रण देके सुनाने के लिये बुलाते हैं आओ सुनो। भगवान किसको बुलावे तो आके सुनो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा! बाबा बुलाते हैं प्रेजेन्ट मार्क है ना निशानी। तो जैसे बाबा निमंत्रण हमको देता है कितने प्यार से, एक एक बच्चे को कितना दिल से प्यार करता है। थोड़ा दिन भी कोई नहीं आयेगा तो कहेगा क्यों नहीं आता? आपको भी फील होता है ना। अगर कोई भी दिन मिस करो तो सारा दिन वो चलता तो है, याद तो आती है ना। जैसे कोई चीज़ बहुत ज़रूरी है और वो मिस हुई है, ऐसे हमारी जीवन बाबा ने बना दी है। बाबा कहता नहीं है कि क्यों नहीं आते हो, क्या है? वह हिसाब लेना होगा तो कोई दिन अचानक लेगा, लेकिन रोज़ याद रखता है कि आज क्लास छोटा था, आज कम थे, तो जो कम होंगे उसको कितना बाबा ने याद किया। ऐसे मिस होना नहीं है क्योंकि भगवान आवे हमको सुनाने कुछ और मैं कोई भी काम से या सुस्ती से नहीं आऊं, तो कौनसी बात अच्छी लगती है? भगवान आया है अपने परमधाम से और हम क्या क्या कर रहे हैं? तो भगवान का प्यार देखो कितना है! वो तैयार होके आता है टाइम पर और कितने प्यार से एक एक से मिलता है।

बाबा की दृष्टि ही सब कुछ है। दृष्टि से हमारी सृष्टि बदल गई। देखो, मातायें अभी क्या लगती हो! ब्रह्माकुमारी। साधारण माता नहीं, घर-गृहस्थी वाली नहीं, देवियों के रूप में। वृत्ति दृष्टि सब बदल गई और सबके दिल से बार-बार क्या निकलता - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। और बाबा का भी रेसपांस कितना अच्छा मिलता है। हम कहें बाबा, तो फौरन बाबा सुनेगा और दृष्टि देगा। तो बाबा का भी प्यार एक एक से बहुत जिगरी है। आप कभी भी कोई कारण से नहीं आओ लेकिन बाबा ज़रूर याद करता है। आज बच्चा नहीं मिला, आज बच्चा दिखाई नहीं पड़ा, तो इतना प्यार बाबा दे रहा है तो हम भी बाबा को प्यार का रेसपांड देते हैं जो बाबा ने कहा वो किया। और क्या चाहिए रेसपांड - बाबा का कहना हमारा करना। ऐसा ही है ना। सारा दिन चलते फिरते आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने यह कहा, तो यह बाबा की कमाल है। जो हरेक को याद करता, आप पूछेंगे बाबा मैं याद में रहती हूँ तो कहेंगे पहले आप, प्यार है ना। लौकिक में भी बच्चा कितना भी दूर हो लेकिन अगर उनका प्यार है जिगरी, तो वह हमेशा बाबा के सामने ही है। बाबा के सामने वो है और उसके सामने बाबा है। दिल का प्यार है ना यह, इसमें रुकावट की कोई बात ही नहीं है। दिल से दिल मिलने की बात है। इसमें टिकट मिली नहीं मिली इसमें पहुँच नहीं पाये, इसमें यह बात नहीं है। हमारी दिल में बाबा, बाबा की दिल में हम। पक्का ना! हमारा स्थान कौनसा है? बाबा की दिल। हरेक बाबा के दिल में समाया हुआ है ना तब तो जिगर से मेरा बाबा कहते हो।

अरे, मेरा बाबा कौन है वह जानो तो सही। नशा कितना है! वाह मेरा बाबा। हरेक उसको याद करता है, हरेक उसको याद करके कितना हल्के हो जाते हैं, कितनी खुशी होती है, फिर यह लाइफ ऐसे चलती है जैसे कोई चला रहा है। खुशी तो हमारे जीवन में है ही है, ऐसे नहीं कभी है, कभी चली जाती है। जाने की चीज़ ही नहीं है। है ना ऐसे कुमारियाँ, हाँ अच्छी लगती है। बाबा कहे कुमारियाँ, कुमारियों को बाबा कितना याद करता है, यह बच जावें। हमारे से ज़्यादा बाबा को ओना रहता है कि मेरा बच्चा माया से बचा रहे, कहाँ नीचे ऊपर न हो। पहले बाबा याद करता है, तो खुशी होती है यानी भगवान हमको याद करता, हम तो याद करते ही हैं लेकिन भगवान किसको याद करता? हम एक एक को याद करता ना। मेरे बच्चे, मेरे मीठे बच्चे, मेरे लाडले बच्चे, क्या नहीं टाइटल देता, वह नशा रहे ना सारा दिन, तो वो दिन कैसा बीतेगा, स्वर्ग तो उसके आगे कुछ नहीं। स्वर्ग के सुख क्या भी हों लेकिन संगम का सुख जो है परमात्मा से मिलने का, वो कोई युग में नहीं। और हम संगम निवासी हैं, खास मधुबन को भाग्य मिला हुआ है, मिलने का स्थान, यही वो स्थान है।